IJAER/ Nov-Dec 2022/Volume-11/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भारत में आर्थिक विकास और महिला श्रम बल की भागीदारी

श्रीमती वीना यादव
शोधार्थी अर्थशास्त्र महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

डॉ विक्रम सिंह
संकाय सदस्य अर्थशास्त्र विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय कुकस
जयपुर

सार

भारत ने पिछले पच्चीस वर्षों में तेजी से आर्थिक विकास, अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव, शैक्षिक प्राप्ति के स्तर में वृद्धि और तेजी से शहरीकरण का अनुभव किया है। इसी अवधि में महिला श्रम बल भागीदारी दर में 23% की गिरावट आई है। आर्थिक विकास और महिलाओं की आर्थिक गतिविधि के बीच क्या संबंध है? क्या वृद्धि पर्याप्त है या विकास की प्रकृति अधिक महिलाओं को श्रम शक्ति की ओर आकर्षित करने में मायने रखती है? कई क्रॉस–कंट्री और देश के भीतर के अध्ययनों से पता चलता है कि महिला श्रम शक्ति की भागीदारी शुरू में आर्थिक विकास के साथ घटती है, फिर से बढ़ने से पहले विकास के एक निश्चित चरण में पठार। यह मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव, आय के बदलते प्रभाव और प्रतिस्थापन प्रभावों और जनसंख्या में महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि का परिणाम माना जाता है। गतिशील पैनल मॉडल का उपयोग करते हुए, यह पेपर आर्थिक विकास के स्तर और श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी दर के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध नहीं ढूंढता है।

मुख्य शब्द: *आर्थिक विकास* , *महिला श्रम*

परिचय

भारत में लगातार आर्थिक विकास के कारण महिला श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) में लगातार गिरावट एक हैरान करने वाली घटना है। हालांकि यह गिरावट की प्रवृत्ति कुछ समय के लिए देखी जा सकती है, नवीनतम रोजगार और बेरोजगारी सर्वेक्षण के परिणामों के साथ इसे तेजी से ध्यान में लाया गया, जिसमें पता चला कि 2014–15 से 2019–20 की अवधि में महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी 33.3 प्रतिशत से घटकर 33.3 प्रतिशत हो गई। ग्रामीण क्षेत्रों में 26.5 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 17.8 प्रतिशत से 14.6 प्रतिशत (एनएसएसओ 2011)। इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन की ग्लोबल एम्प्लॉयमेंट ट्रेंड्स 2013 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत को महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी में 131 देशों में 120वें स्थान पर रखा गया है। महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में गिरावट उन लोगों के लिए चिंता का कारण है जो महिलाओं की भलाई में रुचि रखते हैं और साथ ही वे जो मानते हैं कि महिलाएं मूल्यवान संसाधन हैं और उनका कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए। महिलाओं का रोजगार आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में उनकी प्रगति का एक महत्वपूर्ण कारक है और इसे समाज में उनकी समग्र स्थिति के संकेतक के रूप में भी माना जाता है (मैमेन और पैक्ससन 2008)। रोजगार में लैंगिक अंतर का व्यापक आर्थिक प्रभाव भी है। 2000–2004 के आंकड़ों के आधार पर, एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (ईएससीएपी) का अनुमान है कि यदि भारत की महिला श्रम शक्ति भागीदारी संयुक्त राज्य (86%) के बराबर हो जाती है, तो इसका सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) होगा प्रति वर्ष 4.2 प्रतिशत की वृद्धि और 1.08 प्रतिशत की वृद्धि दर से $19 बिलियन के वार्षिक लाभ का प्रतिनिधित्व करता है। महिला श्रम बल की भागीदारी में 10 प्रतिशत की स्थायी वृद्धि से विकास दर में 0.3प्रतिशत की वृद्धि होगी (यूएनईएससीएपी 2007)। हैरानी की बात है कि महिलाओं के रोजगार पर आर्थिक विकास के प्रभाव के

सीमित और मिश्रित प्रमाण हैं। यह पेपर भारत में आर्थिक विकास और महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों के बीच संबंधों की खोज करके साहित्य में योगदान देता है, एक देश अपने राज्यों में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों में भारी भिन्नता है। पिछले तीन दशकों में अपेक्षाकृत उच्च आर्थिक विकास के साथ एक रूढ़िवादी और पितृसत्तात्मक समाज का जुड़ाव इसे विशेष रूप से दिलचस्प केस स्टडी बनाता है। प्रथम दृष्टया आर्थिक विकास से महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है।

लिंग अनुपात, जिसे समाज अपनी महिलाओं को महत्व देता है, के लिए एक प्रॉक्सी माना जाता है, 2001 और 2011 (भारत के रजिस्ट्रार जनरल 2011) के बीच 927 से घटकर 914 हो गया है। महिलाओं के स्वास्थ्य में निवेश भी कम रहा है, जिसमें मातृ मृत्यु दर में मामूली सुधार हुआ है, जबकि 2000 के दशक की पहली छमाही के दौरान एनीमिया में 6 प्रतिशत अंक की वृद्धि हुई है (भारत के महापंजीयक 2012)। संसद में महिलाओं को एक तिहाई प्रतिनिधित्व प्रदान करने वाले एक विधेयक को 2014 में पहली बार तैयार किए जाने के बाद से कई राजनीतिक दलों के विरोध का सामना करना पड़ा है। भारत में संरचनात्मक परिवर्तन ने अधिकांश विकासशील और विकसित देशों की तुलना में एक अलग प्रक्षेपवक्र का अनुसरण किया है। सामान्य पैटर्न यह है कि कृषि क्षेत्र में शुरू में गिरावट आती है और विनिर्माण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का हिस्सा बढ़ता है; और दूसरे चरण में, सेवा क्षेत्र में विकास का अनुभव होता है। भारत ने अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र द्वारा जोड़े गए मूल्य के आकार में तेजी से गिरावट देखी है, लेकिन विनिर्माण में इसी वृद्धि के बिना। सेवा क्षेत्र द्वारा सुस्त को उठाया गया है, जिसने पिछले बीस वर्षों में उच्च विकास दर का आनंद लिया है। इसके अलावा, भारत की रोजगार वृद्धि आर्थिक विकास के साथ नहीं रही है (हिमांशु 2015(मेहरोत्रा एट अल। 2016 (एलेसेंड्रिनी 2019)। 2017–15 से 2019–20 के दौरान केवल 26 लाख रोजगार सृजित हुए, जबकि 1999–00 से 2004–05 के दौरान 60 मिलियन नौकरियों को जोड़ा गया था (मेहरोत्रा और अन्य। 2014)। बढ़ती आकस्मिकता और कार्यबल के अनौपचारिकीकरण के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। यद्यपि अध्ययन इस प्रक्रिया के लिंग आयामों का विशेष रूप से पता नहीं लगाता है, यह सुरक्षित रूप से माना जा सकता है कि रोजगार सृजन की कमी से महिलाएं कम से कम पुरुषों द्वारा समान रूप से प्रभावित होंगी, यदि अधिक नहीं। यह पेपर आर्थिक विकास और महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए 1983–2010 के राज्य स्तरीय पैनल डेटा का उपयोग करता है। विश्लेषण दो दृष्टिकोणों का उपयोग करके किया जाता है। सबसे पहले, हम राज्यों के शुद्ध घरेलू उत्पाद के स्तर और राज्यों में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों के बीच संबंधों की जांच करते हैं, विशेष रूप से यू आकार के संबंध के लिए परीक्षण। यू आकार की परिकल्पना यह मानती है कि महिला श्रम शक्ति की भागीदारी शुरू में आर्थिक विकास में वृद्धि के साथ घटेगी, लेकिन अंततः अर्थव्यवस्था के विकसित होने और संरचनात्मक परिवर्तन से गुजरने के साथ बढ़ेगी। हम समय और क्षेत्र के निश्चित प्रभावों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक विकास और शिक्षा की अंतर्जातता को नियंत्रित करने के लिए इस संबंध का आकलन करने के लिए गतिशील पैनल विधियों का उपयोग करते हैं। दूसरा, हम यह पता लगाने के लिए आर्थिक विकास को अलग–अलग करते हैं कि क्या महिलाओं की आर्थिक गतिविधि को समझाने में विकास की संरचना की भूमिका है।

यदि यू–आकार की परिकल्पना की पुष्टि की जाती है, तो रोजगार में गिरावट अस्थायी है और केवल विकास प्रक्रिया को दर्शाती है जो कि नियत समय में अपने आप ठीक हो जाएगी। लेकिन अगर परिकल्पना का समर्थन नहीं किया जाता है, तो गिरावट के अन्य अंतर्निहित कारणों की खोज की जानी चाहिए और उनसे निपटने के लिए नीतियां तैयार की जानी चाहिए। विकास की प्रकृति (क्षेत्रों) के बारे में ज्ञान जो महिलाओं की आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देता है, नीति निर्माताओं को विशेष क्षेत्रों में विकास को लक्षित करने और अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के लिए बाधाओं की पहचान करने में मदद करेगा। जहां तक हमारी जानकारी है, भारत के लिए आर्थिक विकास और महिला श्रम शक्ति भागीदारी के बीच संबंधों का परीक्षण करने के लिए इतना व्यापक अभ्यास नहीं किया गया है। हमारे परिणाम बताते हैं कि राज्यों के आर्थिक विकास के स्तर और महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी दरों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। यू–आकार के संबंध के विपरीत, प्रारंभिक परिणाम श्रम बल की भागीदारी और आर्थिक विकास के बीच उल्टे यू संबंध का संकेत देते हैं। एक बार जब हम क्षेत्र और समय निश्चित प्रभावों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो यह संबंध अपना महत्व खो देता है। वृद्धि की संरचना अधिक महिलाओं को श्रम शक्ति की ओर आकर्षित करने में भूमिका निभाती है। कृषि रोजगार और

विनिर्माण मूल्य शेयरों में वृद्धि का महिलाओं की आर्थिक गतिविधि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पेपर का शेष भाग निम्नानुसार व्यवस्थित है। खंड 2 संक्षेप में विकास और महिला श्रम शक्ति भागीदारी के बीच संबंधों पर चर्चा करता है जबकि खंड 3 प्रमुख कारणों की समीक्षा करता है जो भारत में घटती भागीदारी दर की व्याख्या करने में मदद कर सकते हैं। खंड 4 डेटा का वर्णन करता है और क्षेत्रीय पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करते हुए वर्णनात्मक आंकड़े प्रस्तुत करता है। अनुभवजन्य रणनीति और अनुमान के परिणाम खंड 5 (विकास और आर्थिक गतिविधि) और 6 (संरचनात्मक परिवर्तन विश्लेषण) में प्रस्तुत किए गए हैं। खंड 7 समाप्त होता है।

साहित्य समीक्षा

जबकि आर्थिक विकास पर शिक्षा में लैंगिक असमानता के प्रभाव का व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है, ऐसे कुछ अध्ययन हैं जो महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी और आर्थिक विकास के बीच संबंधों का पता लगाते हैं। इसके अलावा, इन अध्ययनों के परिणाम हमेशा एक समान तस्वीर प्रस्तुत नहीं करते हैं, जो आंशिक रूप से डेटा की कमी और विपरीत कार्य–कारण के आसपास के अर्थमितीय मुद्दों के लिए जिम्मेदार है, जिसमें विकास और महिलाओं की आर्थिक गतिविधि एकतरफा संबंध साझा नहीं करती है। विकास पर श्रम बाजार की असमानता के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, क्लासेन और लमन्ना (2019) के एक हालिया अध्ययन ने श्रम शक्ति भागीदारी के दो उपायों का इस्तेमाल किया – कुल श्रम शक्ति का महिला हिस्सा और 93 देशों के लिए महिला से पुरुष आर्थिक गतिविधि दर का अनुपात, 1960 को कवर करते हुए 2000 तक। अध्ययन के परिणाम मोटे तौर पर श्रम बाजार में लिंग भेदभाव के विकास पर नकारात्मक प्रभाव का सुझाव देते हैं, जिसमें वास्तविक निष्कर्ष देशों के उप–नमूने के प्रति संवेदनशील होते हैं, अध्ययन की समय अवधि, और एक नियंत्रण के रूप में शिक्षा में लिंग अंतर को शामिल करना। चर। बलियामौने–लुट्ज़ (2017) के परिणाम परिणामों की व्याख्या करते समय देश या क्षेत्रीय संदर्भ के प्रभाव पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता को सुदृढ़ करते हैं। वे उप–सहारा अफ्रीकी (एसएसए) और अरब देशों के लिए इस संबंध की जांच करते हैं और पाते हैं कि श्रम शक्ति का महिला हिस्सा आर्थिक विकास के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है। यह काफी हद तक महिलाओं द्वारा ऐतिहासिक आर्थिक गतिविधि दर (अरब देशों में कम और एसएसए में उच्च, हालांकि कम उत्पादक क्षेत्रों में) और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं की संरचना का परिणाम है। भारतीय संदर्भ में एकमात्र अध्ययन एस्टेव–वोर्ल्ट (2019) द्वारा किया गया था। 1961–1991 के दौरान सोलह भारतीय राज्यों के पैनल डेटा का उपयोग करते हुए, उन्होंने पाया कि प्रबंधकीय भूमिकाओं और गैर–कृषि श्रमिकों में महिला से पुरुष अनुपात द्वारा मापा गया श्रम बाजार में लिंग भेदभाव का प्रति व्यक्ति आय पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन राज्य स्तर पर रोजगार में लिंग अंतराल में अंतर्जातता को भी नियंत्रित करता है।

यह पत्र महिला श्रम शक्ति भागीदारी पर विकास के प्रभाव की जांच करने में रुचि रखता है। आर्थिक विकास और महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों ने कई अध्ययनों (गोल्डिन 2014(तानसेल 2015(फातिमा और सुल्ताना 2016(कोटिस 2017) में एक यू–आकार का संबंध दिखाया है। महिला श्रम शक्ति की भागीदारी को शुरू में आर्थिक विकास के साथ कम करने के लिए परिकल्पित किया गया है, फिर पठार को फिर से यू आकार देने से पहले। यह अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव, आय के बदलते प्रभाव और प्रतिस्थापन प्रभावों, और जनसंख्या में महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि (गोल्डिन 2018) के प्रतिबिंबित होने के रूप में तर्क दिया गया है। कम आय वाली, कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में महिलाएं परिवार के खेतों या उद्यमों में पारिवारिक श्रमिकों के योगदान के रूप में अपनी भूमिकाओं के माध्यम से श्रम शक्ति में सक्रिय भागीदार होती हैं। इस काम के लिए कोई मौद्रिक पारिश्रमिक नहीं है, लेकिन इसे श्रम शक्ति का हिस्सा माना जाता है। आर्थिक विकास का यह चरण अपेक्षाकृत उच्च प्रजनन दर और महिलाओं के लिए निम्न शैक्षिक स्तर के साथ मेल खाता है। आर्थिक विकास आमतौर पर बदलते क्षेत्र की संरचना के साथ होता है; औद्योगीकरण पर अधिक ध्यान दिया जाता है जबकि कृषि अपनी प्रधानता खोने लगती है जिसका प्रभाव श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी को कम करने पर पड़ता है। कृषि संबंधी गतिविधियों को अन्य घरेलू कर्तव्यों के साथ जोड़ना आसान है, जिनके लिए महिलाएं जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, औद्योगीकरण के शुरुआती चरणों के दौरान उपलब्ध नौकरियां महिलाओं के लिए आकर्षक नहीं हैं, क्योंकि बड़े पैमाने पर ब्लू–कॉलर गतिविधियों में उनकी भागीदारी के खिलाफ सामाजिक मानदंड हैं। आर्थिक

विकास के साथ घरेलू आय में वृद्धि होती है और महिलाएं श्रम शक्ति से बाहर हो जाती हैं क्योंकि उन्हें घर में आर्थिक रूप से योगदान करने की आवश्यकता नहीं होती है। जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है, कई बदलाव होते हैं जो एक बार फिर महिलाओं की श्रम शक्ति की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। उनके शैक्षिक स्तर में सुधार होता है जिससे रोजगार के अधिक और बेहतर अवसर मिलते हैं, प्रजनन दर में कमी आती है जिससे महिलाओं पर बच्चे के पालन–पोषण का बोझ कम होता है और महिलाओं के लिए सामाजिक रूप से स्वीकार्य सेवा क्षेत्र में नई नौकरियां खुलती हैं। बढ़ते वेतन स्तरों के साथ, प्रतिस्थापन प्रभाव आय प्रभाव पर हावी हो जाता है। समय के साथ, कई अध्ययनों ने अनुभवजन्य कार्यों में यू आकार की घटनाओं के अस्तित्व की पुष्टि की है। पहली पीढ़ी के लेखों ने इस संबंध का परीक्षण करने के लिए देशों में क्रॉस सेक्शनल डेटा का इस्तेमाल किया (गोल्डिन 2017(मैमेन और पैक्ससन 2018)। तानसेल (2012) ने तुर्की में प्रांतों के भीतर तीन समय अवधियों में इस संबंध का अध्ययन किया, जिसके परिणाम यू आकार की परिकल्पना का समर्थन करते हैं। इस परिकल्पना का समर्थन करने के लिए क्रॉस–सेक्शनल डेटा का उपयोग करने से श्कुज़नेट्स फॉलसीश हो सकता है, जिसमें संबंध डेटा का एक आर्टिफैक्ट है और समय श्रृंखला डेटा (टैम 2013) का उपयोग करके मान्य नहीं है। इस चिंता को दो अलग–अलग अध्ययनों में पैनल विधियों के उपयोग द्वारा संबोधित किया गया था, जिसमें एक बार फिर से एक देश के भीतर महिलाओं के स्थ्व्ट के ॅ आकार के पैटर्न का समर्थन करने वाले साक्ष्य मिले (टैम 2015(लुसी 2019)।

साहित्य की हालिया व्यापक समीक्षा में, गद्दीस और क्लासेन (2019) ने पैनल डेटा अनुप्रयोगों के साथ–साथ इस संबंध का परीक्षण करने के लिए उपयोग किए जाने वाले अनुभवजन्य विनिर्देशों के साथ कई कमियों को नोट किया। उनका तर्क है कि सकल घरेलू उत्पाद के बजाय, महिलाओं की श्रम आपूर्ति पर इसके प्रभाव के लिए सकल घरेलू उत्पाद में क्षेत्र विशिष्ट बदलाव की जांच की जानी चाहिए। एक और चिंता की बात यह है कि पैनल अध्ययन महिला श्रम शक्ति भागीदारी के साथ सकल घरेलू उत्पाद की संभावित अंतर्जातीयता के लिए जिम्मेदार नहीं है। वे अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुमानों और आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या के अनुमानों के चौथे, पांचवें और छठे संस्करण का उपयोग करके महिला श्रम शक्ति और आर्थिक विकास के बीच संबंधों का अनुमान लगाते हैं। वे पाते हैं कि यू आकार के संबंध का सबूत कमजोर है और अंतर्निहित डेटा, विशेष रूप से जीडीपी अनुमानों के प्रति बहुत संवेदनशील है। एक गतिशील ळडड अनुमानक का उपयोग करते हुए, ॅ– आकार का संबंध कई मामलों में गायब हो जाता है। वे महिलाओं की आर्थिक गतिविधि पर क्षेत्रीय विकास के प्रभाव पर विचार करने के लिए संरचनात्मक परिवर्तन के घटकों को भी खोलते हैं।

कुल मिलाकर, आर्थिक विकास और महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों के विस्तार के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है। यह संबंध सांस्कृतिक संदर्भ और विकास की वास्तविक प्रक्रिया दोनों द्वारा मध्यस्थ है। इस जटिल परस्पर क्रिया को कबीर और नताली (2015) द्वारा प्रबलित किया गया है, जो इस साहित्य का सर्वेक्षण करते हैं और पाते हैं कि विकास का प्रभाव भी लिंग असमानता के विभिन्न निर्माणों में भिन्न होता है।

भारतीय संदर्भ

श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी लैंगिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को नियंत्रित करने वाले सामाजिक मानदंडों से उतनी ही प्रभावित होती है जितनी कि आर्थिक और संरचनात्मक कारकों से। यह खंड उन कारकों की समीक्षा करता है जो भारतीय संदर्भ में इस गिरावट की व्याख्या करते हैं। यहां चर्चा किए गए अधिकांश अध्ययन विभिन्न एनएसएस सर्वेक्षण दौरों के व्यक्तिगत आंकड़ों पर आधारित हैं और मुख्य रूप से महिलाओं की श्रम बाजार भागीदारी के चालकों के रूप में शिक्षा, आय, रोजगार के अवसरों या सांस्कृतिक कारकों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जो उभरता है वह यह है कि महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारण तंत्र वास्तव में अच्छी तरह से समझ में नहीं आते हैं और संदर्भों में लागू होने वाली कोई सरल व्याख्या नहीं है। महिलाओं के रोजगार को प्रभावित करने वाले कारक आपस में परस्पर क्रिया भी करते हैं जिससे उनके प्रभाव को अलग करना मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा का प्रभाव, उपलब्ध आर्थिक अवसरों और महिलाओं के कार्य मानदंडों को नियंत्रित करने वाली सांस्कृतिक

धारणाओं दोनों पर निर्भर करेगा। यह कुछ हद तक घरों की आर्थिक स्थिति से भी मध्यस्थता करेगा। पारंपरिक समाजों में जहां पुरुष को परिवार के लिए प्रदान करने की भूमिका दी जाती है, श्रम बाजार में महिलाओं की सापेक्ष अनुपस्थिति उनकी और घर की प्राथमिकताओं दोनों को अच्छी तरह से प्रतिबिंबित कर सकती है, जिसका अक्सर वर्ग अर्थ होता है। एक कामकाजी महिला घर के लिए आर्थिक कठिनाई के मुद्दों का संकेत दे सकती है और इस प्रकार, घरेलू आय में सुधार के साथ, महिलाओं के लिए श्रम बाजार से बाहर निकलने की प्रवृत्ति होती है। यह विशेष रूप से तब लागू होगा जब पुरुषों के आर्थिक अवसरों का विस्तार हो रहा है और उनकी मजदूरी दरों में वृद्धि हो रही है जिससे महिलाओं के लिए प्रजनन क्षेत्र में अपनी ऊर्जा केंद्रित करना संभव हो गया है (रंगराजन और कौल, 2011)। लॉजिस्टिक रिग्रेशन मॉडल का उपयोग करते हुए 1999–2000 के एनएसएस डेटा का विश्लेषण करते हुए, ओल्सेन और मेहता (2006) निरक्षर और खराब शिक्षित महिलाओं के साथ–साथ विश्वविद्यालय की डिग्री वाले महिलाओं की शैक्षिक स्थिति द्वारा रोजगार के लिए एक यू कर्व पाते हैं, जो मध्यम शिक्षित महिलाओं की तुलना में काम करने की अधिक संभावना रखते हैं। लेखकों का सुझाव है कि ये परिणाम घरेलू आय और सांस्कृतिक मानदंडों में वृद्धि से प्रेरित हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के कुछ समूहों के लिए श्गृहिणीकरणश प्रक्रिया होती है। श्रम बाजार में गरीब महिलाओं की भागीदारी लैंगिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को नियंत्रित करने वाले सामाजिक मानदंडों से उतनी ही प्रभावित होती है जितनी कि आर्थिक और संरचनात्मक कारकों से। यह खंड उन कारकों की समीक्षा करता है जो भारतीय संदर्भ में इस गिरावट की व्याख्या करते हैं। यहां चर्चा किए गए अधिकांश अध्ययन विभिन्न एनएसएस सर्वेक्षण दौरों के व्यक्तिगत आंकड़ों पर आधारित हैं और मुख्य रूप से महिलाओं की श्रम बाजार भागीदारी के चालकों के रूप में शिक्षा, आय, रोजगार के अवसरों या सांस्कृतिक कारकों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जो उभरता है वह यह है कि महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारण तंत्र वास्तव में अच्छी तरह से समझ में नहीं आते हैं और संदर्भों में लागू होने वाली कोई सरल व्याख्या नहीं है। महिलाओं के रोजगार को प्रभावित करने वाले कारक आपस में परस्पर क्रिया भी करते हैं जिससे उनके प्रभाव को अलग करना मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा का प्रभाव, उपलब्ध आर्थिक अवसरों और महिलाओं के कार्य मानदंडों को नियंत्रित करने वाली सांस्कृतिक धारणाओं दोनों पर निर्भर करेगा। यह कुछ हद तक घरों की आर्थिक स्थिति से भी मध्यस्थता करेगा। पारंपरिक समाजों में जहां पुरुष को परिवार के लिए प्रदान करने की भूमिका दी जाती है, श्रम बाजार में महिलाओं की सापेक्ष अनुपस्थिति उनकी और घर की प्राथमिकताओं दोनों को अच्छी तरह से प्रतिबिंबित कर सकती है, जिसका अक्सर वर्ग अर्थ होता है। एक कामकाजी महिला घर के लिए आर्थिक कठिनाई के मुद्दों का संकेत दे सकती है और इस प्रकार, घरेलू आय में सुधार के साथ, महिलाओं के लिए श्रम बाजार से बाहर निकलने की प्रवृत्ति होती है। यह विशेष रूप से तब लागू होगा जब पुरुषों के आर्थिक अवसरों का विस्तार हो रहा है और उनकी मजदूरी दरों में वृद्धि हो रही है जिससे महिलाओं के लिए प्रजनन क्षेत्र में अपनी ऊर्जा केंद्रित करना संभव हो गया है (रंगराजन और कौल, 2011)। लॉजिस्टिक रिग्रेशन मॉडल का उपयोग करते हुए 199–2000 के एनएसएस डेटा का विश्लेषण करते हुए, ओल्सेन और मेहता (2006) निरक्षर और खराब शिक्षित महिलाओं के साथ–साथ विश्वविद्यालय की डिग्री वाले महिलाओं की शैक्षिक स्थिति द्वारा रोजगार के लिए एक यू कर्व पाते हैं, जो मध्यम शिक्षित महिलाओं की तुलना में काम करने की अधिक संभावना रखते हैं। लेखकों का सुझाव है कि ये परिणाम घरेलू आय और सांस्कृतिक मानदंडों में वृद्धि से प्रेरित हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के कुछ समूहों के लिए श्गृहिणीकरणश प्रक्रिया होती है। गरीब।

रोजगार और आर्थिक विकास में क्षेत्रीय बदलाव

महिलाओं की आर्थिक गतिविधि पर डेटा 1983–84 और 2009–10 के बीच आयोजित छह राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) के रोजगार और बेरोजगारी के मोटे दौर से लिया गया है। हम 25–59 वर्ष की आयु की महिलाओं के लिए श्रम बल की भागीदारी दर द्वारा महिलाओं की आर्थिक गतिविधि को प्रॉक्सी करते हैं। भारत के 28 राज्य 2-

इस पत्र में सभी विश्लेषण सामान्य प्रिंसिपल और सहायक स्थिति (यूपीएसएस) गतिविधियों पर आधारित हैं। यह नमूना 25–59 आयु वर्ग की महिलाओं के लिए प्रतिबंधित है, ताकि युवा समूहों में शिक्षा में वृद्धि से रोजगार की प्रवृत्ति को अलग किया जा सके। एनएसडीपी प्रति व्यक्ति 4 और क्षेत्रवार शेयरों के आंकड़े केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ 2011) से प्राप्त किए गए हैं। भारत के लिए 1983–84 से 2009–10 तक 25–59 वर्ष की आयु की महिलाओं के बीच

श्रम बल भागीदारी दर में परिवर्तन और क्षेत्रीय स्तर पर अलग–अलग प्रस्तुत करती है। यह नवीनतम एनएसएसओ दौर (2009–10) के लिए रोजगार दर और पिछले 5 वर्षों में परिवर्तन को भी दर्शाता है। राष्ट्रीय प्रवृत्तियों से पता चलता है कि लंबी अवधि के साथ–साथ कम समय के क्षितिज में श्रम बल की भागीदारी में गिरावट आई है। यह अवैतनिक और सशुल्क कार्य भागीदारी दरों दोनों के लिए सही है। 1983–84 और 2009–10 के बीच की अवधि में, अवैतनिक कार्य भागीदारी दर में 22-8 प्रतिशत की गिरावट आई और भुगतान कार्य भागीदारी दर में 24-3 प्रतिशत की गिरावट आई। भारत में क्षेत्रों 5 के भीतर महिला श्रम शक्ति भागीदारी के स्तर और प्रवृत्ति में भारी भिन्नता है। 2009–10 में, पूर्वी राज्यों ने 22-6 प्रतिशत की सबसे कम समग्र भागीदारी दर दिखाई, जबकि दक्षिणी राज्यों में 51 प्रतिशत पर दोगुने से अधिक थे। देश के बाकी हिस्सों की तुलना में, दक्षिणी राज्यों में महिलाओं को गतिशीलता पर कम प्रतिबंधों के साथ उच्च स्थिति का आनंद मिलता है, जो महिलाओं के उत्पादक कार्यों में संलग्न होने की क्षमता के लिए निहितार्थ हो सकता है। दिलचस्प बात यह है कि पूर्वी राज्यों ने भी छोटी और लंबी अवधि (क्रमशः 36-7% और 42-4%) की तुलना में सबसे अधिक गिरावट का अनुभव किया है, जबकि दक्षिणी राज्यों में सबसे कम गिरावट (क्रमशः 16%) और 15-3% है। 1983–84 से 2009–10 की 25 वर्षों की अवधि में, उत्तर–पूर्वी राज्यों को छोड़कर सभी क्षेत्रों में भुगतान और अवैतनिक कार्य भागीदारी दर में गिरावट आई है। इन राज्यों ने अवैतनिक कार्य भागीदारी दर में 120-3 प्रतिशत की वृद्धि के कारण महिलाओं के लिए समग्र श्रम शक्ति भागीदारी दर में वृद्धि का अनुभव किया है।

निष्कर्ष

पिछले पच्चीस वर्षों में भारत में काफी बदलाव आया है। देश ने तेजी से आर्थिक विकास, अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव के साथ–साथ शहरीकरण की उच्च दर, शैक्षिक प्राप्ति के स्तर में वृद्धि और अन्य बातों के अलावा प्रजनन दर में गिरावट का अनुभव किया है। लेकिन इसी अवधि के दौरान महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में क्रमिक और दीर्घकालिक गिरावट आई है। 25–59 वर्षीय महिलाओं के अनुपात में, जो श्रम बल का हिस्सा हैं, 23 प्रतिशत की गिरावट आई है। यह भारत के कुछ सबसे गरीब राज्यों में कहीं अधिक है। इस पत्र में हम आर्थिक विकास, आर्थिक विकास की संरचना और महिलाओं के रोजगार के बीच संबंधों की जांच करते हैं। कुछ क्रॉस–कंट्री केस स्टडीज में, शोधकर्ताओं ने आर्थिक विकास और महिलाओं के रोजगार के बीच एक यू–आकार का संबंध पाया है। यह अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव, आय के बदलते प्रभाव और प्रतिस्थापन प्रभावों और जनसंख्या में महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि के प्रतिबिंबित होने के रूप में तर्क दिया जाता है। हमारे विश्लेषण में हमें भारत में इस तरह के संबंध का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। हमारे परिणामों से संकेत मिलता है कि भारत में महिला श्रम शक्ति की भागीदारी में गिरावट ष्सामान्यष विकास प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है, जो अधिक विकास के साथ खुद को उलट देगी, जैसा कि कुछ अन्य देशों ने अनुभव किया है।

संदर्भ

1. अब्राहम, विनोज। 2015- "ग्रामीण भारत में रोजगार वृद्धिरू संकट से प्रेरित?ष आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक सपअ (16): 97–104
2. एलेसेंड्रिनी, मिशेल। 2016 "भारतीय विनिर्माण में रोजगारहीन विकासरू एक कलडोरियन दृष्टिकोणष (नवंबर): 1–32।
3- भालोत्रा, एसआर, और एम उमाना–अपोंटे। 2012- "विकासशील देशों में महिलाओं की श्रम आपूर्ति की गतिशीलता।" इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ लेबर (IZA) वर्किंग पेपर। इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ

लेबर (IZA) वर्किंग isijA http:@@papers-ssrn-com@sol3@papers-cfm\abstract&id¾1591706A

4. कबीर, नैला और लुइसा नताली। 2013- "लैंगिक समानता और आर्थिक विकासरू क्या कोई जीत है?"

5. क्लासेन, स्टीफ़न, और फ्रांसेस्का लमन्ना। 2017 ष्आर्थिक विकास पर शिक्षा और रोजगार में लैंगिक असमानता का प्रभावरू देशों के एक पैनल के लिए नया साक्ष्य।ष नारीवादी अर्थशास्त्र 15 (3): 91–132

6- कोतवाल, अशोक, भरत रामास्वामी और विलीमा वाधवा। 2011-"आर्थिक उदारीकरण और भारतीय आर्थिक विकासरू साक्ष्य क्या है?ष जर्नल ऑफ इकोनॉमिक लिटरेचर 49 (4) (दिसंबर)रू 1152–1199 डीओआई: 10-1257/जेएल.49-4-1152 http:@@pubs-aeaweb-org@doi@abs@10-1257@jel-49-4-1152A

7. रंगराजन, सी, और पद्मा अय्यर कौल। 2011 ष्लापता श्रम बल कहाँ है?ष आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक ग्स्टप नंबर 39: 68–72

8. रावलियन, एम।, और जी। दत्त। 1996- "भारत के गरीबों के लिए आर्थिक विकास की क्षेत्रीय संरचना कितनी महत्वपूर्ण है?ष विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा 10 (1) (1 जनवरी): 1&25A MksbZ:10-1093@wber@10-1-1A http:@@wber-oÛfordjournals-org@content@10@1@1-short

9- :डमैन, डेविड। 2006- "ग्जंइवदक2 कैसे करेंरू स्टैटा में अंतर और सिस्टम ळडड का एक परिचय।ष एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल (2 मई)। डोई:10-2139/ssrn-982943- http:@@papers-ssrn-com@abstract¾982943A

10- टैम, हेनरी। 2011- "आर्थिक विकास के साथ यू–आकार की महिला श्रम भागीदारीरू कुछ पैनल डेटा साक्ष्य।" अर्थशास्त्र पत्र 110 (2) (फरवरी): 140–142 कवप:10-1016/j-econlet-2010-11-003A http:@@linkinghub-elsevier-com@retrieve@pii@S0165176510003733A

11- यूनेस्को। 2007- एशिया और प्रशांत का आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण। एशिया और प्रशांत के लिए आर्थिक और सामाजिक आयksxA http:@@www-unescap-org@pdd@publications@survey2007@01&Survey&2007-pdf